बच्चे बन सकते हैं बड़े लीडर

भारतीय मूल की अंजलि भाटिया को नागरिक राजनय के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया।

गिरिराज अग्रवाल

क्या कोई उस उम्र में दुनिया को बदलने का सपना देखने और उसे हकीकत में बदलने का साहस कर सकता है जब उसका कम उम्र का होना न तो उसे भारत में वाहन चलाने की इज़ाजत देता हो और न ही उसे उम्र के हिसाब से यहां वोट डालने के लायक समझा जाए? लेकिन भारतीय मूल की एक युवा अमेरिकी नागरिक अंजलि भाटिया ने आज से तीन साल पहले अमेरिका में 16 साल की उम्र में ही एक ऐसे संगठन की स्थापना कर डाली जो विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता को उभारकर उन्हें अपने समुदायों और देशों की समस्याएं हल करने में मदद करने के साथ-साथ वैश्विक भाईचारा बढ़ाने को भी प्रेरित कर रहा है।

उनकी अनूठी पहल और उनके संगठन की उपलब्धियों के चलते इस साल फ़रवरी में उन्हें वाशिंगटन डी. सी. में यू.एस. सेंटर फ़ॉर सिटीज़न डिप्लोमेसी ने नागरिक राजनय के क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान के लिए पुरस्कृत किया। पुरस्कार पाने वाले छह लोगों में से वह सबसे युवा हैं। सेंटर फ़ॉर सिटीजन डिप्लोमेसी ने उन्हें प्रशंसा पत्र के अलावा पांच हज़ार डॉलर की राशि भी दी जिसे उन्होंने अपने संगठन को दान कर दिया। पुरस्कार प्रदान करने के मौके पर सेंटर फ़ॉर सिटीजन डिप्लोमेसी के बोर्ड की सदस्य और जे. विलियम एंड हैरियट फ़ुलब्राइट सेंटर की प्रेसिडेंट हैरियट मेयर फ़ुलब्राइट ने कहा, ''यह हर अमेरिकी नागरिक का अधिकार ही नहीं ज़िम्मेदारी भी है कि वह अपने समुदाय और देश के लिए उच्च कोटि का नागरिक राजनयिक बने।''

किन्नेलो, न्यू जर्सी की वासी अंजलि भाटिया भारतीय मूल के माता-पिता की संतान हैं। उनके पिता मोती भाटिया सूरत, गुजरात और मां राधा भाटिया आगरा, उत्तर प्रदेश के मूल वासी हैं। ये लोग 1980 के दशक में अमेरिका चले गए। अंजलि भाटिया ड्यूक यूनिवर्सिटी में रॉबर्ट्सन स्कॉलर के रूप में न्यूरो इकोनॉमिक्स की पढ़ाई कर रही हैं। उन्हें बचपन से ही तरह-तरह के अनुभवों से रूबरू होने का मौका मिला। जब वह बचपन में भारत में अपने दादा-दादी और नाना-नानी के यहां आती तो देखती कि किस तरह कुछ बच्चे स्कूल जाने के बजाय सड़कों पर भीख मांग रहे होते थे और डॉक्टरों के भीड़ भरे क्लीनिक में गरीब रोगी अपनी बारी के इंतज़ार में दरवाज़े पर बैठे रहते थे। यहीं से उनके मन में समाज के दबे-कुचले वर्ग के लिए कुछ करने की इच्छा जाग्रत हुई। शुरुआत में यह प्रवृत्ति गरीब बच्चों के लिए कपड़े आदि जुटाने के रूप में सामने आई, जिसे बाद में उन्होंने डिस्कवर वर्ल्ड्स नामक संगठन के जरिये औपचारिक स्वरूप दिया।

इस संगठन की खास बात यह है कि यह गैरसरकारी संगठन पूरी तरह विद्यार्थियों द्वारा ही चलाया जा रहा है। इस संगठन के इस समय अमेरिकी स्कूलों में 57 चैप्टर चल रहे हैं जो बच्चों को नेतृत्व के जरिये अपने समाज की बेहतरी के लिए प्रेरित करते हैं। ये चैप्टर अपना कार्यक्षेत्र खुद ही तय करते हैं जो वैश्विक तापमान वृद्धि, एचआईवी-एड्स, गरीबी हटाने और मानव तस्करी जैसे विषयों पर जागरूकता ला रहे हैं।

डिस्कवर वर्ल्ड्स के चैप्टर पब्लिक स्पीकिंग और नाटकों आदि के जरिये समुदाय से जुड़े किसी भी मुद्दे पर जागरूकता लाने का काम करते हैं और एकल इकाई के रूप में काम करते हैं। संस्था का कार्यकारी बोर्ड इन चैप्टरों के बीच समन्वय का काम करता है। वह कहती हैं, ''कोई भी छात्र जिसमें लगन और प्रतिभा हो, चैप्टर शुरू कर सकता है। उन्हें सिर्फ डिस्कवर वर्ल्ड्स से संपर्क करने की ज़रूरत है।''

अंजलि भाटिया ने अपने संगठन के जरिये सबसे पहले एचआईवी-एड्स और नरसंहार के चलते अनाथ हुए रवांडा के बच्चों की मदद करने की ठानी। वह कहती हैं कि यह काम सिर्फ दान के जरिये नहीं हो रहा है बल्कि समस्या को समझकर और आपसी संबंध स्थापित कर ऐसा किया जा रहा है। रवांडा के लिए उन्होंने तीन तरह के कार्यक्रम चलाए हैं- इनमें कोई अमेरिकी कंपनी रवांडा के अनाथालयों के बच्चों की स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के लिए धन मुहैया कराती है। इसी तरह के एक अन्य कार्यक्रम में अमेरिका की फ़ुटबाल और बास्केटबाल टीमें रवांडा में इसी तरह की टीमों का ज़िम्मा लेती हैं। एक अन्य कार्यक्रम में अमेरिकी स्कूलों का नाता रवांडा की स्कूलों से सिस्टर स्कूलों के रूप में स्थापित किया जाता है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

डिस्कवर वर्ल्ड्स
http://Discoverworlds.org

यू.एस. सेंटर फ़ॉर सिटीज़न डिप्लोमेसी
http://www.uscenterforcitizendiplomacy.org

फोटो साभार: अंजलि भाटिया

बिल्कुल बाएं: वर्ष 2004 में पुणे स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में ''विश्व समुदाय और स्वयंसेवा'' विषय पर विद्यार्थियों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करते हुए अंजलि भाटिया।

ऊपर: फ़रवरी 2008 में वाशिंगटन डी.सी. में विलियम एंड हैरियट फुलब्राइट सेंटर की प्रेसिडेंट हैरियट मेयर फुलब्राइट से यू.एस. सेंटर फ़ॉर सिटीज़न डिप्लोमेसी का नागरिक राजनय पुरस्कार ग्रहण करने के बाद प्रसन्न मुद्रा में अंजलि भाटिया।

बाएं: अंजलि भाटिया वर्ष 2007 में रवांडा में महिलाओं के साथ टोकरी बुनते हुए। ये महिलाएं टोकरी बेचकर ही अपना जीवनयापन करती हैं। डिस्कवर वर्ल्ड्स ने शुरू में रवांडा को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

अब वह अपने संगठन को विस्तार देकर इसी साल भारत में भी इस संगठन को शुरू कर रही हैं। पहला चैप्टर कोलकाता में शुरू किया जाएगा। उनका मानना है कि भारत में भी छात्रों का झुकाव सामुदायिक सेवा की ओर होने लगा है जो कि अमेरिका में बहुत व्यापक है, इसलिए हम भारत में छात्रों को यह बताना चाहेंगे कि वे अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल कर गरीबी हटाने और अपने आसपास की समस्याओं का समाधान खोजने की दिशा में काम कर सकते हैं। वह कहती हैं, ''भारत में अब यह परंपरा जोर पकड़ रही है कि छात्र अतिरिक्त गतिविधियों और सामुदायिक सेवा के काम से भी खुद को जोड़ें। चूंकि अमेरिका में यह बहुत व्यापक है, इसलिए मैं भारत में छात्रों को यह बताना चाहती हूं कि वे समस्याओं का हल खोजने के लिए कितना कुछ कर सकते हैं।''

डिस्कवर वर्ल्ड्स पूरी तरह विद्यार्थियों द्वारा संचालित संगठन है। ऐसे में इसे वित्तीय दृष्टि से कैसे व्यवहारिक बनाए रखा गया है? ''हमारे संगठन के लिए कोई नौकरी नहीं कर रहा है। सभी विद्यार्थी हैं। किसी को वेतन नहीं मिलता। हां, हम उन लोगों से दान स्वीकार करते हैं जो हमारे काम में यकीन करते हैं।''

वह कहती हैं, ''मेरी सबसे बड़ी ताकत मेरे माता-पिता का यह विश्वास है कि बच्चे भी लीडर बन सकते हैं। ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि बच्चों को दुनिया में तब्दीली लाने के लिए पहले बड़े होने का इंतज़ार करना चाहिए। मैं ऐसे माहौल के साथ बड़ी नहीं हुई और इसीलिए मुझे दूसरे विद्यार्थियों को यह बताने में मदद मिली कि वे अपने समुदायों के लिए कितना कुछ कर सकते हैं।''

वह कहती हैं, ''हमें बड़ों की तरह बच्चों को बड़ा करने और कर चुकाने जैसी समस्याओं को निपटाने में समय नहीं गंवाना पड़ता। इस समय का इस्तेमाल दुनिया को बेहतर बनाने में किया जाना चाहिए।'' भारत के युवा समुदाय के लिए उनका यही संदेश है, ''अपनी रोजमर्रा की पढ़ाई-लिखाई और कभी-कभार की समाज सेवा से आगे बढ़ो। बड़े होने तक इंतज़ार करने के बजाय समस्याओं का अभी हल खोजो।''

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।